RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

वाद्य एवं वादन शैली (अवनद्ध वाद्य तबला) के विशेष सन्दर्भ में

रूचि रानी गुप्ता

शोध छात्रा (SRF) संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

डा0 लालमणि मिश्र जी के अनुसार, संगीतात्मक ध्वनि तथा गति को प्रकट करने के उपकरण को वाद्य कहा जाता है। इसी दृष्टि से प्राचीन काल में मानव कंठ को भी वाद्य माना गया है। चूंकि कंठ वाद्य ईश्वर निर्मित है, अतएव मनीषियों ने मनुष्यों द्वारा निर्मित वाद्यों का ही मनन तथा वर्णन किया है।

वाद्य का शाब्दिक अर्थ है ''वादनीय'' या बजाने योग्य यन्त्र विशेष।'' वद धातु से णिच प्रत्यय के संयोग से ''वाद्य'' तत्पश्चात यत् प्रत्यय के योग से ''वाद्य'' शब्द की उत्पत्ति हुयी है, जिसका अर्थ है बोलना। ''वदतीति वाद्यम'', अर्थात जो बोलता है वही वस्तुतः वाद्य है। ''मनुष्य का आदि वाद्य ताली था अर्थात मनुष्य अपने शरीर के विभिन्न भागों पर हाथों के द्वारा आघात करके लय रूपों की प्रस्थापना कर लेता था। इन्ही तालियों की प्रेरणा से ''अवनद्ध वाद्यों'' का क्रमिक विकास हुआ''[1] ध्यान पूर्वक सुनने पर हमें वाद्य में स्वरों और उसमें बंधे शब्दों का स्पष्ट उच्चारण सुनाई पड़ता है यही स्पष्टता ही वाद्यों की सफलता है। वादक के द्वारा विभिन्न माध्यमों जैसे रेशम, जानवरों के बालों आदि के घर्षण द्वारा, मिट्टी का लकड़ी या फिर अन्य किसी धातु के खाली पात्र को चमड़े से आच्छादित कर उस पर हाथ, लकड़ी अथवा अन्य किसी माध्यम से प्रहार करके वाद्यों से ध्वनियां निकाली जा सकती हैं। सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त लय व स्वर सृष्टि में आरम्भ से ही विद्यमान है। भारतीय समाज व संस्कृति प्रत्येक युग में धार्मिक भावनाओं के साथ जुड़ते चले आये हैं, ऐसे में संगीत भी इन भावनाओं से कैसे अछूता रह सकता था। प्रारम्भ में मनुष्य ने किसी गीत या वाद्य का अविष्कार जान बूझकर नहीं किया, बल्कि स्वतः ही उसका निर्माण हुआ होगा।

प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में हमें वाद्यों का वर्णन किसी न किसी देवताओं से सम्बद्ध प्राप्त होता है। वीणा वादिनी माँ सरस्वती विद्या और कलाओं की देवी मानी जाती है, भगवान शंकर अपने हाथों में डमरू लिए हुए होते है। गणेश जी मृदंग वादक थे कृष्ण जी ने वंशी बजाकर अपनी लीला दिखाई, शंख, चक्र, गदाधारी, भगवान विष्णु से लेकर नारद मुनि तक सभी देवताओं का सम्बन्ध किसी न किसी वाद्य से था। संगीत में वाद्यों का क्रमिक विकास विश्व की मानव जाति का एक सम्मिलित प्रयास है। [2]''हाथ से ताली बजाने की क्रिया को जातक में ''पाणि स्वर'' कहा है। रामायण महाभारत और हरिवंशपुराण में पाणि वादकों का उल्लेख प्राप्त होता है। हाथ से ताली बजाकर लय का निर्वाह करते हुए, गायन वैदिक युग से प्रचलित रहा है। सामगान में स्त्रियों द्वारा ताली बजाकर नृत्य करने का उल्लेख वेदों में प्राप्त होता है।''[2]

किसी भी वाद्य को बजाने की विधि या तकनीकी ''वादन शैली'' या ''बाज'' कहलाती है। डा0 योगमाया शुक्ल जी के अनुसार ''वादन में विशिष्ट हस्तक्षेप की प्रधानता से मुक्त वादन विधि को ''बाज'' कहा जाता है।''[3]

श्री गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव जी ने ''बाज'' (वादन शैली) की परिभाषा इस प्रकार दी है ''बाज को वादन शैली भी कहते हैं। जिस प्रकार गायन की शैली को गायकी कहते हैं उसी प्रकार किसी वाद्य को बजाने की शैली, विधि या स्टाइल को बाज कहते हैं।''[4] विभिन्न घरानों की पहचान उनकी वादन शैली से ही सम्भव होती है। तबले में छः घराने दिल्ली, अजराडा, लखनऊ, फर्रुखाबाद, बनारस तथा पंजाब है तथा इन सभी घरानों की वादन शैली भिन्न–भिन्न है, दिल्ली में 2 अंगुलियों का तेटे तो लखनऊ में तेटे बजाने के लिए पांचों अंगुलियों का प्रयोग होता है। डा0 नीलू शर्मा जी के अनुसार ''दिल्ली, अजराड़ा, लखनऊ, फर्रुखाबाद बाज में स्याही पर अनामिका अथवा तीसरी अंगुली लगभग 20 अंश का न्यून कोण बनाती हुयी रखी जाती है।''[5] सभी घरानों की अपनी–अपनी वादन शैलियां हैं तथा इन्हीं वादन शैलियों में भिन्नता के कारण घराने अस्तित्व में आये हैं।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के साथ वाद्यों का प्रयोग आदिकाल से होता पाया गया है जैसे–जैसे मानव विकास की ओर उन्मुख हुआ और सभ्यता का विकास हुआ साथ ही वाद्यों का विकास होता गया और इन वाद्यों की संख्या में भी विभिन्न गायन शैलियों आदि विधाओं के विकास के साथ ही बढ़ोत्तरी हुयी तथा वाद्यों की वादन शैली की गुणवत्ता में भी परिवर्तन आया है। ध्रुपद गायन शैली के साथ प्रायः पखावज वाद्य को उपयुक्त समझा जाता है परन्तु वर्तमान में तबला वाद्य पर भी प्रचुर मात्रा में ध्रुपद गायकी के साथ संगत करते देखा जा रहा है ऐसा कैसे सम्भव हुआ? तबला वाद्य पर पखावज के खुले बोलों का वादन वादन विधि तकनीक में परिवर्तन करके सम्भव हुआ मध्यकाल में जब ख्याल गायकी प्रचार में आयी वैसे–वैसे पखावज का प्रयोग कम होता देखा गया क्योंकि पखावज की गम्भीर ध्वनि ख्याल जैसे मधुर और श्रृंगारिक गायन शैली के साथ उपयुक्त नहीं थी इस प्रकार तबला वाद्य उन्नत करता गया इसके साथ तबले में पखावज के बोल बजाना भी सम्भव था तबला वाद्य की वादन तकनीक में थोड़ा सा परिवर्तन कर खुले हाथ से पखावत के बोलों को तबला पर बजाने से पखावज की गम्भीरता भी कायम रखना सम्भव हुआ और इस प्रकार तबले ने पखावज का स्थान ले लिया वर्तमान में ध्रुपद जैसी गम्भीर गायकी के साथ तबला वाद्य का प्रयोग प्रचुर मात्रा में देखा जा रहा है तबला का भारत का प्राचीन लोक लय वाद्य है। तबला चाहे शास्त्रीय संगीत हो या लोक संगीत

RRIJM 2015, All Rights Reserved

या फिर फिल्मी संगीत सभी विधाओं पर अपना विशेष स्थान रखता है। शास्त्रीय संगीत का तो प्राण तबला ही है। तबला वाद्य की वादन तकनीक में परिवर्तन कर आप तबले का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की सभी विधाओं में कर सकते हैं चाहे वह गायन शैली की संगत करने की बात हो अथवा तंत्र वाद्य के साथ संगत की या फिर नृत्य के साथ संगत करना हो। तबले का प्रयोग शास्त्रीय संगीत में कथक नृत्य के साथ विशेष रूप से ''लखनऊ तबला घराने'' के खलीफा उस्ताद आबिद हुसैन खाँ जी को ''नचकरन बाज'' की उपाधि से नवाज़ा गया था वैसे सभी तबला के छः घरानों में कथक नृत्य के साथ संगत की जाती है। तबले का प्रयोग चाहे ध्रुपद जैसी गम्भीर शैली हो या फिर श्रृंगार प्रधान ख्याल गायन शैली हो दोनों में मात्र वादन तकनीक में परिवर्तन कर संगत किया जाता है इसीलिए तबले का स्थान सभी अवनद्ध वाद्यों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

सन्दर्भ सूची

1. वाद्य वादन अंक जनवरी–फरवरी 1975 लेख सत्य नरायण शर्मा ''संगीत वाद्यो की उत्पत्ति तथा विकास'', पृ0 19
2. सेन कुमार अरून ''भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन'', पृ0 18
3. शुक्ल योगमाया – ''तबले का उद्‌गम विकास और वादन शैलियां, पृ0 178
4. संगीत पत्रिका अक्टूबर, 2004, पृ0 46–47 लेख ''तबला वादन में हाथ का रख रखाव'' नीलू शर्मा।
5. श्रीवास्तव गिरीश चन्द्र ''ताल कोश'', पृ0 159 रूबी प्रकाशन।

RRIJM 2015, All Rights Reserved